हिंदी कार्यशाला: श्रीमती रमा गुप्ता (संचालिका)

बुधवार, २२.०९.२०२१

'सीखने के लिए एक जुनून विकसित करें। यदि आप ऐसा करते हैं, तो आप कभी भी बढ़ना बंद नहीं करेंगे।'

किसी भी राष्ट्र की भाषा केवल संप्रेक्षण का माधयम नहीं होती अपितु वह उस देश की संस्कृति व परम्पराओं की वाहक भी होती है। हिंदी, जिसे राजभाषा का दर्जा १४ सितंबर १९४९ को प्राप्त हुआ, एक सर्वव्यापी भाषा है, न कि पैतृक संपत्ति। यह प्रत्यक्षीकरण द्वारा सीखी जाती है।

जैसे-जैसे समय बदल रहा है, शिक्षकों के लिए अध्ययन-अध्यापन की सीमाएँ बदलती जा रही हैं। साथ-साथ उनकी जिमीदारियाँ भी बढ़ती जा रही हैं। शिक्षक के शिक्षण कौशल को समय-समय पर निखारना बहुत आवश्यक हो गया है, ताकि वे छात्रों की जिज्ञासा को समाप्त कर उनके सर्वांगीण विकास में सहायक हो।

एक शिक्षक द्वारा भाषा सीखने की तकनीकों को सफलतापूर्वक सीखने के बाद ही वह वांछित सीखने के परिणामों को प्राप्त करने में सक्षम होगा। इसी विचारधारा को केंद्र बिंदु बनाते हुए विद्यालय ने हिंदी विभाग के शिक्षकों के लिए एक कार्यशाला का आयोजन किया। कार्यशाला का संचालन श्रीमती रमा जी द्वारा किया गया। श्रीमती रमा जी, लोरेटो कॉन्वेंट, लखनऊ से स्नातक हैं। देश के प्रतिष्ठित विद्यालयों- सरदार पटेल विद्यालय (दिल्ली), आर्मी स्कूल (पुणे), डॉ. राधाकृष्णन इंटरनेशनल स्कूल (दिल्ली), में शिक्षण के क्षेत्र में २५ वर्षों का एक समृद्ध अनुभव के साथ आभासी पटल पर उपस्थित हुईं । श्रीमती रमा जी ने शब्दों के उच्चारण पर विशेष बल देते हुए उसके महत्व को उजागर किया। इसी के साथ उन्होंने की-कि व ए-ऐ का अंतर, में-मैं आदि विषयों के उचित प्रयोग पर प्रकाश डाला। कार्यशाला का समापन एक प्रश्न-उत्तर सत्र में हुआ, जिसमें अध्यापिकाओं ने अपनी दैनिक हिंदी कक्षाओं में आने वाली समस्यायों का समाधान प्राप्त किया।

विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती मंजु मेहरा जी ने रमा जी का शिक्षिकाओं को उचित मार्गदर्शन देकर उनके शिक्षण कौशल में वृद्धि करने एवं प्रतिभा को निखारने के लिए धन्यवाद दिया।

सभी शिक्षिकाओं के लिए यह एक लाभकारी अनुभव रहा। जिसका प्रयोग वे हिंदी को अधिक रुचिकर व प्रभावी ढंग से पढ़ाने में करेंगी साथ ही वे यह सुनिश्चित करेंगी कि विद्यार्थियों में एक समृद्ध भाषा का निर्माण हो।